

## इगास बग्वाल महोत्सव

### चर्चा में क्यों?

**इगास बग्वाल**, जिसे **बूढ़ी दवाली** या **हरबोधनी एकादशी** के नाम से भी जाना जाता है, **दवाली के 11 दिनों बाद उत्तराखंड में मनाया जाने वाला एक पारंपरिक त्यौहार** है। यह त्यौहार राज्य की **सांस्कृतिक वरिष्ठता** को दर्शाता है, जो साझा परंपराओं और उत्सवों के माध्यम से समुदायों को एकजुट करता है।

### प्रमुख बदि

#### ■ उत्पत्ति और महत्त्व:

- इगास बग्वाल **कार्तिक शुक्ल एकादशी** को मनाई जाती है और यह **भगवान वशिष्ठ के चार महीने के वशिराम काल के अंत का प्रतीक** है, जो नई शुरुआत के लिये एक शुभ समय है।
- "इगास" शब्द उत्तराखंड में सांस्कृतिक गौरव और पौराणिक श्रद्धा से जुड़ा है।
- ऐसा माना जाता है कि जब **भगवान राम के अयोध्या लौटने की सूचना दवाली के 11 दिनों बाद उत्तराखंड पहुँची**, तो स्थानीय लोगों ने अपने तरीके से दवाली मनाई।
- एक अन्य कविद्वारा **गढ़वाली योद्धा माधव सहि भंडारी की दापाघाटी में तबित पर वजिय का जश्न मनाती है**, जिसे समुदाय द्वारा एकता और वीरता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

#### ■ भेलो- मशाल परंपरा:

- ग्रामीण लोग **देवदार की लकड़ियों को बांधकर भेलो या अंधाया** नामक **बड़ी मशालें** बनाते हैं, जिन्हें **जलाकर ऊपर की ओर घुमाया जाता है**, जो **अंधकार के नषिकासन का प्रतीक** है।
- ऐसा माना जाता है कि इस मशाल अनुष्ठान से **देवी लक्ष्मी से समृद्धि का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है**।

#### ■ त्यौहार अनुष्ठान और पशु सम्मान:

- उत्तराखंड की **कृषि जीवन शैली** के लिये आवश्यक मवेशियों को इगास बग्वाल के दौरान सम्मानित किया जाता है। ग्रामीण उन्हें नहलाते हैं और हलदी और सरसों के तेल से सजाते हैं।
- **पशुओं के लिये विशेष भोजन तैयार किया जाता है**, तथा सांप्रदायिक सद्भाव का जश्न मनाने के लिये ग्रामीणों के बीच पारंपरिक व्यंजन बाँटे जाते हैं।

#### ■ इगास बग्वाल के संरक्षण के प्रयास:

- स्थानीय प्राधिकारी और सांस्कृतिक संगठन कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से इगास बग्वाल को बढ़ावा देते हैं, जिसका उद्देश्य **त्यौहार की वरिष्ठता को संरक्षित करना** है।
- युवा-केंद्रित पहल इगास बग्वाल के सांस्कृतिक महत्त्व पर जोर देती है, तथा यह सुनिश्चित करती है कि इसकी वरिष्ठता भविष्य की पीढ़ियों तक बनी रहे।